B. A.-I (HISTORY) HONOURS, 2020.

NOTES PREPARED BY →

DR. MANITA KUMARI YADAV
ASSISTANT PROFESSOR
DEPARTMENT OF HISTORY
VAISHALI MAHILA COLLEGE
HAJIPUR, BIHAR UNIVERSITY
MUZAFFARPUR.

Scanned with CamScanner

सिंध पर अरबों का आक्रमण :-

भारत एवं अरब के बीच चिरकाल से व्यापारिक संबंध चले आ रहे थे। 7वीं सदी में अरबवासी व्यापार एवं वाणिज्य के माध्यम से पश्चिमी समुद्री तटीय प्रदेशों से सिंध आया - जाया करते थे। भारत के सिंध पर अरब आक्रमण की जानकारी का मूल स्रोत गुर्जर - प्रतिहारों का नवसारी अभिलेख, अली अहमद का चचनामा तथा अलबिलादुरी का फुतुहुल - अलबलदान है।

भारत आने के क्रम में अरब के द्वारा मूल रूप से तीन मार्गों का अनावरण किया गया →

(i) समुद्री मार्ग से समुद्री तट पर पहुँचना
(ii) उत्तर - पश्चिम से खैबर एवं बोलन दर्रों के माध्यम से भारत में प्रवेश करना
(iii) मकरान का मरु प्रदेश का समतलीय भाग

समुद्री मार्गों का प्रयोग सबसे पहले हुआ, जिसके माध्यम से अरब 7वीं शताब्दी के पूर्वार्ध में भारत आए। यद्यपि इन क्षेत्रों से अरबों का आगमन व्यापारियों के रूप में हुआ, क्षेत्र लोलुप साम्राज्यवादी के रूप में नहीं।

परंतु इतना अवश्य कहा जा सकता है कि इन मार्गों से अरब व्यापारियों ने क्षेत्र लोलुपता दिखाए बिना कुछ महत्वपूर्ण पृष्ठभूमि तैयार कर ली।

अरबों ने खैबर एवं बोलन दर्रों के माध्यम से भी भारत में आने का प्रयास किया। किंतु काबुल व जाबुल की सतर्कता तथा किकान के जाट के शूरवीरता के कारणवश इस क्षेत्र से भारत में पैर जमाने में अरब पूर्णतः असफल रहे।

अंततः अरबों ने मकरान के मरू प्रदेश के समतलीय मार्ग से सिंध में प्रवेश किए।

711 ई० में मुहम्मद - बिन - कासिम ने सिंध के सबसे महत्वपूर्ण बंदरगाह देबल पर अधिकार किया और इसी समय से सिंध क्षेत्र में अरबों की सफलता प्रारंभ हुई।

Scanned with CamScanner